बी. ए. भाग-3
हिन्दी-प्रतिष्ठा
पेपर-7
'व्याकरण-भाषाविज्ञान'

रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग
डी. के. कालेज डुमरॉव, बक्सर

व्याकरण-भाषाविज्ञान –

व्याकरण किसी भाषा के तात्कालिक स्वरूप और नियमों से सम्बद्ध है, परन्तु वह यह नहीं कहता कि कोई रूप क्यों, कैसे और कब बना। वह केवल भाषा सम्बन्धी क्या का उत्तर दे सकता है, 'क्यों' का नहीं। इसीलिए व्याकरण को विवरणात्मक या वर्णनात्मक भाषाविज्ञान कहते हैं, क्यों कि उसका काम केवल विवरण या वर्णन प्रस्तुत कर देना है। दूसरे शब्दों में, इसे यों कह सकते हैं कि व्याकरण भाषा के निष्पन्न स्वरूप का वर्णन कर विरत हो जाता है, किन्तु भाषाविज्ञान उसका कारण भी बताता है। जिस तरह भाषा के नियमों की जानकारी के लिए व्याकरण की आवश्यकता है उसी तरह व्याकरण के नियमों की जानकारी और व्याख्या के लिए भाषा-विज्ञान की आवश्यकता है।

व्याकरण का सम्बन्ध भाषा-विशेष से होता है और उसमें भी काल-विशेष से, अर्थात् व्याकरण किसी एक भाषा के किसी एक काल में प्रचलित रूपों को नियमबद्ध करता है। इसके प्रतिकूल भाषा-विज्ञान का सम्बन्ध भाषामात्र से अर्थात्

सभी भाषाओं से है और उसके नियम भी व्यापक और स्थायी होते हैं। व्याकरण भी तुलनात्मक हो सकता है, किन्हीं दो भाषाओं- जैसे, संस्कृत और लातिन - की तुलना की जा सकती है, किन्तु वह तुलना भी भाषा-विशेष की ही होगी और साथ ही काल-विशेष की भी। तात्पर्य कि तुलनात्मक रूप से भी व्याकरण की सीमा बनी रहती है।

जैसा ऊपर कहा गया है, व्याकरण विवरणात्मक या वर्णनात्मक होता है, किन्तु भाषाविज्ञान व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक होता है, अर्थात् वह भाषा - सम्बन्धी नियमों और परिवर्तनों में कार्य - कारण - भाव स्थापित करने का प्रयास करता है। उदाहरणार्थ, हिन्दी व्याकरण के अनुसार 'आय' शब्द स्त्रीलिंग है, पर व्याकरण यह नहीं बताता कि एक ही धातु और प्रत्यय से निष्पन्न 'आय' शब्द स्त्रीलिंग क्यों हो जाता है जबकि 'व्यय' पुलिंग है? इसका समाधान भाषाविज्ञान करता है। 'आय' शब्द के लिंग पर फ़ारसी के 'आमद' शब्द का प्रभाव है जो स्त्रीलिंग है। 'आमद' का स्त्रीलिंग में प्रयोग करने वाली ज़बान ने 'आय' का प्रयोग करना

शुरू किया तो अर्थ-संस्कार से उसको भी स्त्रीलिंग बना दिया, यद्यपि प्रकृति-प्रत्यय की दृष्टि से उसे पुंलिंग ही होना चाहिए, जैसा समय, उदय, अन्वय, भत्यय, प्रत्यय उपाय आदि में देखा जाता है।

इसी प्रकार हिन्दी व्याकरण 'पुस्तक' शब्द को स्त्रीलिंग कह देता है, पर उसका कारण नहीं बताता। संस्कृत के नपुंसकलिंग 'पुस्तक' शब्द का हिन्दी में सामान्यतः पुंलिंग में प्रयोग होना चाहिए, किन्तु अरबी की 'किताब' के प्रभाव-स्वरूप 'पुस्तक' शब्द का स्त्रीलिंग में व्यवहार होने लगा। यही कारण है कि भाषा विज्ञान की व्याकरण का व्याकरण कहते हैं, अर्थात् वह व्याकरण द्वारा निर्दिष्ट नियमों का सकारण विवेचन करता है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट-प्रोफेसर
हिन्दी-विभाग
डी. के. कालेज डुमरॉव
बक्सर (बिहार)